समयांतर

शोध और संधान

समयांतर

स्थापना वर्ष : 1970
पुनर्प्रकाशन: अक्टूबर, 1998 से निरंतर

ISSN 2249-0469

संपादक : **पंकज बिष्ट**

व्यवस्था : **ठाकुर प्रसाद चौबे**
व्यवस्था सहयोग : **सुशील शर्मा**
टाइपसेट : **राधा**

चंदे की दरें
सामान्य : एक वर्ष : रु. 350;
दो वर्ष : रु. 600
तीन वर्ष : रु. 850;
पांच वर्ष : रु. 1350
मित्र : एक वर्ष : रु. 500; दो वर्ष : रु. 800
तीन वर्ष : रु. 1000; पांच वर्ष : रु. 1500
रजि. डाक से रु. 250 वार्षिक अतिरिक्त

छात्रों के लिए :
एक वर्ष : रु. 250; दो वर्ष : रु. 350
(प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने पर)

संस्थाओं के लिए : एक वर्ष : रु. 500.00
(रजिस्टर्ड डाक से मंगवाने के लिए एक वर्ष के कृपया रु. 250 अतिरिक्त भेजें)

विशेष सहयोग
आजीवन : दस हजार रुपए
दस वर्ष : पांच हजार रुपए

बैंकके माध्यम से शुल्क भेजने के लिए
Samayantar Current a/c
No. 27520200000094
IFSC code: BARB0MAYVIH
Bank of Baroda, Mayur Vihar Ph.-I,
Delhi-110091

कृपया रेमिटेंस की सूचना तत्काल ईमेल अथवा एसएमएस से दें।

समयांतर, 79-ए, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095
फोन : 9667685659 (संपादकीय)
09871403843 (व्यवस्था)

email: samayantar.monthly@gmail.com
samayantar@yahoo.com

नोट: *समयांतर* से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

शोध और संधान ***परिशिष्ट***

मार्च, 2023

लेख

2. **21वीं सदी के हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श** – सुनंदा मोहिते

4. **मृदुला गर्ग के हरी बिंदी कहानी संग्रह में चित्रित नारी विमर्श**
– सफिया कासम मुल्ला

7. **21वीं सदी के दूसरे दशक के हिंदी साहित्य में चित्रित किसान विमर्श**
– रशिद नजरूद्दीन तहसिलदार

9. **मोहनदास नेमिशराय का उपन्यास *जख्म हमारे* में मजदूर विमर्श**
– विकास विधाते

12. ***मुक्तिपर्व* उपन्यास में दलित विमर्श** – उत्तम लक्ष्मण थोरात

14. **निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी विमर्श**
– प्रदीप माणिकराव शिंदे

18. ***धरती का बाप* कविता संग्रह में भारतीय किसान की व्यथा**
– गोरख निळोबा बनसोडे

21. **21वीं सदी के हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श**
– भरत भीमराव जाधव

25. **भूमंडलीकरण और *मीठी नीम* उपन्यास** – भास्कर भवर उमराव

28. **किसान जीवन की दर्दभरी दास्तान : *अकाल में उत्सव***
– युवराज माने

32. **सुशीला टाकभौरे की कविता में स्त्री स्वर**
– सहदेव वर्षाराणी निवृत्तीराव

36. **21वीं सदी के दूसरे दशक में हिंदी कविता में चित्रित भूमंडलीकरण**
– युवराज राजाराम मुळये

41. **21वीं सदी के दो दशक और हिंदी कविता में भूमंडलीकरण**
– शिल्पा शिंदे

44. **अकाल में उत्सव : किसान जीवन की दुखभरी दास्तान**
– नितीन धवडे

47. **भारतीय किसान जीवन का महाकाव्य : *बारोमास***
– संग्राम शिंदे

50. **अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में मुस्लिम विमर्श**
– इन्नुस एस. शेख

54. **21वीं सदी के दूसरे दशक के हिंदी काव्य में नारी विमर्श**
– सविता लालासो नाईक – निंबाळकर

58. **जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों में चित्रित विद्रोही नारियां**
– सचिन मधुकर कांबळे व हसीना अब्दुलाजीज मालदार

आवरण चित्र : जोन मिरो

किसान जीवन की दर्दभरी दास्तान: *अकाल में उत्सव*

युवराज माने

भारत को कृषिप्रधान देश कहा गया है। देश के 80 प्रतिशत लोग खेती पर निर्भर थे। बदलते प्राकृतिक माहौल, देश की कृषि नीति, वैश्वीकरण आदी से भारतीय किसानों की आर्थिक स्थिति अत्यंत कमजोर बन गई है। कृषि क्षेत्र की अविश्वसनियता के कारण अब 70 प्रतिशत से घटकर 60 प्रतिशत लोग ही जीविकोपार्जन के लिए कृषि पर निर्भर हैं। पहले जमाने में किसान के पास खेती अधिक मात्रा में होती थी। प्राकृतिक व्यवस्था बहुत अच्छी रहती थी। मौसम ठीक समय पर होता था। बारिश अधिक होती थी। सूखा कम रहता था। संयुक्त परिवार थे। सभी ओर हरियाली ही हरियाली होती थी, पूरी धरती सुजलाम- सुफलाम दिखाई देती थी।

अकाल में उत्सव पंकज सुबीर द्वारा लिखा उपन्यास है। यह रचना किसान की समस्याओं को चित्रित करती है। साथ ही सरकारी शासन प्रणाली और उसका किसानों के साथ किस प्रकार का व्यवहार है। इस पर भी प्रकाश डालती है। उपन्यास का नायक रामप्रसाद सूखा पानी गांव का एक छोटा किसान है। रामप्रसाद के जीवन की कथा समस्त भारतीय किसानों की कथा है। रामप्रसाद और कमला का दर्द भारतीय किसानों का दर्द है। इस में दो कथाएं चलती हैं। एक रामप्रसाद के परिवार और परिजनों की, तो दूसरी नगर उत्सव में काव्य सम्मेलन की। रामप्रसाद की कहानी किसान की व्यथा के साथ किसान विकट परिस्थितियों में भी ईमानदारी से लड़ने का प्रतीक है, तो दूसरी ओर भ्रष्ट व्यवस्था, स्वार्थ, चाटुकारिता को दर्शाती है। पढ़े-लिखे लोग, अनपढ़ किसानों से भी गए गुजरे हैं। किसान अपने स्वाभिमान के लिए किसी भी परिस्थिति में घुटने नहीं टेकता। तो दूसरी ओर 'जेंटलमैन' कहे जाने वाले लोग अपने स्वाभिमान को घर में छोड़ कर आता है। रामप्रसाद की तरह स्वाभिमान से रहने वाले किसान अंत में आत्महत्या ही करते हैं।

लाल बहादुर शास्त्री जी ने 'जय जवान जय किसान' का महत्वपूर्ण नारा दिया था। देश की रक्षा के लिए जवान जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण किसान भी है। क्योंकि खाली पेट कोई सैनिक लड़ नहीं सकता। किसान के दर्द को केंद्र में रखकर कई साहित्यकारों ने किसान को अपनी कृति का प्रमुख पात्र बनाया है। प्रेमचंद ने किसान के दुख दर्द को वाणी प्रदान की। किसान के जीवन पर प्रेमचंद के गोदान और *प्रेमाश्रय* उपन्यास के अलावा भगवानदास मोरवाल का *नरक मसीहा*, रामू शर्मा का *हलफनामा*, जगदीश गुप्त का *कभी ना छोड़ें खेत*, विवेक राय का *सोना माटी*, कमलाकांत त्रिपाठी का *बेदखल*, काशीनाथ सिंह का *रेहन पर रग्घु* संजीव का *फांस* और वर्तमान समय में पंकज सुबीर का *अकाल में उत्सव* अति महत्वपूर्ण कृतियां दिखाई देती हैं, जिसमें किसान जीवन की त्रासदी को अपने अपने तरीके से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। *अकाल में उत्सव* उपन्यास सन 2016 प्रकाशित हुआ है। पंकज सुबीर ने प्रस्तुत उपन्यास में वर्तमान समय में किसान की दशा क्या है? सरकारी शासन प्रणाली, साहूकार, बैंक और बेवक्त बदलते मौसम के बीच भारतीय किसान किस प्रकार पीसता जा रहा है। इसका सटीक वर्णन किया है। उपन्यास का नायक रामप्रसाद समस्त भारतीय किसानों का प्रतिनिधित्व करता है। सरकार और सरकारी बाबू का किसानों के साथ किस प्रकार का व्यवहार होता है, उसका प्रतिनिधित्व कलेक्टर श्रीराम परिहार करता है। उपन्यास एक तरफ किसान जीवन की घुटन भरी दास्तान है तो दूसरी ओर सरकारी अधिकारियों का रंगीन जीवन दिखाई देता है। पंकज सुबीर के इसके अतिरिक्त *वह सहर तो नहीं, जिन्हें जुर्म-ए-इश्क पे नाज था* आदि उपन्यास हैं। उनके चार कहानी संग्रह प्रकाशित हैं। साथ ही संपादन कार्य भी विपुल मात्रा में है। पंकज सुबीर विविध पुरस्कारों से सम्मानित हैं।

किसान जीवन की दर्दभरी दास्तान : *अकाल में उत्सव*

ये कहानी सुखा पानी गांव के छोटे किसान रामप्रसाद की है। एक ऐसा मिश्रित आबादी वाला गांव जहां आदिवासियों की आबादी के साथ बहुत कम संख्या में मुस्लिम आबादी भी रहती है। सरकार की दृष्टि से देखा जाए तो यह एक आदिवासी गांव है। जिसके चारों तरफ जंगल ही जंगल है। जंगल में सागौन के वृक्ष, जो पीला सोना है। इस पीले सोने के लालच में वहां के प्रभावशाली लोग जंगल काटते रहे

और शहर में जाकर बेचते रहें। जंगल की कटाई के कारण सुखा पानी गांव की जमीन बंजर सी हो गई है। एक तो चारों तरफ पहाड़ होने से जमीन उपजाऊ नहीं और दूसरी तरफ लोग जंगल काटते चले गए। सुखा पानी गांव का वर्णन करते हुए उपन्यासकार लिखते हैं -''सुखा पानी! एक छोटा सा गांव। जितना विचित्र नाम उतना ही विचित्र गांव। पहाड़ों से घिरा हुआ गांव जहां पर जमीन बहुत उपजाऊ नहीं है। एक तो मिट्टी भी पथरीली है और इस पर सिंचाई की भी कोई बहुत अच्छी व्यवस्था नहीं है। शायद इसी कारण इस गांव का नाम सूखा पानी पड़ा होगा।''1(पंकज सुबीर, 2020ई.) इस गांव के सारे किसान छोटे किसान हैं। जिनके पास एकड़ में नहीं डेसिमल में जमीन है। यहां के किसान प्रमुखता से सोयाबीन और गेहूं की फसल उगाते हैं। सुखा पानी गांव के किसानों की स्थिति इतनी अच्छी नहीं है, जिससे उनका गुजारा हो जाए। पेट की आग बुझाने के लिए उसे खेती के साथ किसान से मजदूर बनना पड़ता है। किसान को पता है, खेती एक जुआ है। पर वह हर साल ये जुआ खेलता है। उसे यह भी अच्छी तरह से मालूम है, कि यह जुआ कभी भी उसका नहीं हो सकता। पर वह उसे किस्मत पर छोड़ अपना दांव खेलता ही रहता है। जिस किसान की आर्थिक स्थिति अच्छी है, उसकी बात अलग है। जो छोटे किसान हैं वे मालिक से मजदूर कब बन जाते हैं, उन्हें पता भी नहीं चलता। ''छोटा किसान जब तक लड़ सकता है तब तक किसान रहता है और फिर हार कर मजदूर बन जाता है। पहले अपने लिए मजदूरी करता था अब दूसरों के लिए करता है।''2 खेती का जुआ खेलते समय आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। इस कारण कई किसानों को बैंकों, सोसाइटी, सूदखोरों से कर्ज उठाना पड़ता है। रामप्रसाद की स्थिति भी उसी प्रकार की है। रामप्रसाद के पिताजी मरते समय रामप्रसाद के माथे पर कर्ज छोड़ गए थे। सूदखोरों का सूद बहुत विचित्र तरीके का होता है। सूदखोर जो कर्जा देते हैं उसमें से ही पहले सूद काटकर जो बाकी बचता है वही देते हैं। किसान फसल की उम्मीद पर कर्जा लिया करते हैं। फसल बिकने से पहले ही कई समस्याएं खड़ी होती रहती हैं। कभी प्राकृतिक आपदाएं, तो कभी अन्य कामों में बड़ा खर्च होता है। इस कारण किसान समय पर अपना कर्जा चुकता नहीं कर पाता।

आज भी गांव में रीति-रिवाज, रूढ़ि-परंपराओं में किसान बंधा हुआ दिखाई देता है। शादी ब्याह, नुकता (मृत्युभोज) बीमारियों के इलाज, प्राकृतिक आपदाएं, बच्चों की शिक्षा आदि के कारण किसान को जमीन बेचनी पड़ती है। रामप्रसाद के पिताजी भी इसी प्रकार जमीन बेचते गए। धीरे-धीरे जमीन सिमटती गई। तीन बहनों की शादी भागीरथ (रामप्रसाद का छोटा भाई) की पढ़ाई और उसका गवना में पिताजी द्वारा छोड़ी पांच एकड़ जमीन अब दो एकड़ रह गई उसे याद ही नहीं है। भागीरथ पढ़ाई पूरी करने के बाद शहर में नौकरी करने लगा। शहर में ही अपने रहने की व्यवस्था कर ली। कई बार बीज बोने के लिए किसान के पास पैसे नहीं होते। किसान बीज नहीं बोएगा, तो साल भर में खाने के लिए अनाज कहां से लाएगा? उसका गुजारा कैसे होगा? पैसों की कमी के कारण घर की औरतें मां, बेटी, पत्नी के जेवर कभी-कभी गिरवी तो कभी बेचने पड़ते हैं- ''किसान के जीवन में बढ़ते दुख उसकी पत्नी के शरीर पर घटते जेवरों से अकाली किए जा सकते हैं। नई बहू जब आती है तो नए घागरे, लुगड़े, पोलके के साथ तोड़ी, बजट्टी, टुस्सी, झालर, लच्छे, बौंदा करधनी में झमकती है। फिर धीरे धीरे उम्र बढ़ने के साथ खेती किसानी की सुरसा अपना मुंह फाड़ती है और महिलाओं के शरीर पर से एक-एक जेवर कम होता जाता है।''3

कभी-कभी बहन बेटियों के ससुराल वालों को खुश करने के लिए किसान को कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। किसान की स्त्री किसान की व्यथा को देखकर अपने आभूषण, जो स्त्री को प्राणों से प्रिय होते हैं, उन्हें हंसी-खुशी गिरवी रखने को देती है। किसान को चिंता रहती है कि रखे हुए आभूषण वापस ला पाएंगे या डूब जाएंगे। किसान की स्त्री उसकी स्थिति को देखकर कमला (रामप्रसाद की पत्नी) सा व्यवहार करती है। कमला दलील पेश करते हुए रामप्रसाद की सांत्वना देती है, ''अने डूब जाय तो डूब जाय, म्हारे से तो नी पेनी जाए इत्ती मोटी-मोटी तोड़ी। हड्डी में लग जाए तो दरद करें हैं। तम तो यो करजो कि उठाते बने तो उठा लीजो और जो नी उठाते बने, तो तोड़ी कटवा के, सुनार को हिसाब करके म्हारे लिए झालर (पायजेब) ला दीजो।''4 यहां कमला तोड़ी डूब जाने के दर्द को छुपा कर, वह पायजेब में खुश है। यही दिखाने का प्रयास करती है।

नगर उत्सव की कहानी तब शुरू होती है, जब रबी की फसल पकनी लगती है। गेहूं की बालियां खेतों में झूम रही थीं, चने की घेंटीयों को देख-देख किसान सपने संजोने लगा था। तभी पर्यटन विभाग के श्रीराम परिहार शहर के कलेक्टर शहर में नगर उत्सव कराने के लिए फंड दे रहे हैं। अगर नगर उत्सव मार्च से पहले नहीं किया गया, तो फंड लैप्स हो जाएगा। यह चिंता उन्हें सता रही है। इसके लिए कलेक्टर साहब, मोहन राठी, जो शहर का समाज सेवक है, राहुल जो स्वयं घोषित पत्रकारों का मुखिया है, रमेश चौरसिया पार्टी का सदस्य, आनंद शर्मा सेवानिवृत्त कर्मचारी है, उनके साथ बातचीत करते हुए स्थानीय संगोष्ठी के लिए कवि, चिंतक तथा साहित्यकार को बुलाने का काम इन पर सौंपते हैं। काव्य सम्मेलन में दिनेश रघुवंशी भी इन सब की मदद करता है। सरकारी विभाग में लेनदेन किस प्रकार होती है, जो देश की राजधानी से शुरू होकर, राज्य की राजधानी से होते हुए, जिला मुख्यालय में आकर खत्म होता है। शहर उत्सव के लिए आया बजट बारह लाख का है। तीन दिन कार्यक्रम करना है। संस्कृति विभाग ठेकेदार को कवि सम्मेलन का आयोजन करने को कहता है। सरकारी कार्यक्रम में दस लाख का बजट हो तो एक लाख कवि सम्मेलन में और नौ लाख अधिकारियों के जेब में। ऐसी सरकारी विभाग की पद्धति रहती है। अगर मार्च एंडिंग तक उत्सव का आयोजन नहीं किया तो बजट लैप्स हो जाएगा- ''फरवरी और मार्च यह दो महीने सबके लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं किसान के लिए भी और कलेक्टर के लिए भी। इधर फसल आ रही होती है और उधर साल खत्म होने को होता है। इधर फसल से आने वाले पैसों से हिसाब-किताब चुकाने का तनाव होता है, तो उधर मार्च से पहले हिसाब किताब में लैप्स होने वाले पैसों को ठिकाने लगाने का तनाव होता है। दोनों ही हिसाब के भाग दौड़ में लगे रहते हैं।''5 एक ओर किसान के पास पैसे नहीं हैं। आने वाले समय में परिवार का गुजारा कैसे होगा, इस चिंता में डूबा हुआ है, तो दूसरी ओर पैसे कैसे खर्च करें, ताकि बजट लैप्स ना हो की चिंता सता रही है। यह हमारे

समाज व्यवस्था की अजब विडंबना है। एक कलेक्टर जैसे जिम्मेदार पद पर रहने वाला जनता का सेवक जनता की सेवा छोड़ मुख्यमंत्री की चापलूसी करता रहता है।

समाज व्यवस्था कैसे गरीब लोगों को अनदेखा करती है, इसका जीवंत उदाहरण यहां देखने को मिलता है। एक गरीब किसान राजेश अपनी अम्मा को अस्पताल में भर्ती करता है। जब कलेक्टर अस्पताल में आते हैं, अम्मा का हालचाल पूछते हैं। राजेश, रामप्रसाद खुश होते हैं। अम्मा खुशी में कलेक्टर को भगवान तुम्हें बड़ा अफसर बना दे ऐसा आशीष देती है। पर जैसे ही कलेक्टर अस्पताल से जाते हैं। सभी कर्मचारियों का व्यवहार बदल जाता है। इलाज न होने के कारण राजेश की अम्मा की मौत हो जाती है। राजेश और रामप्रसाद अम्मा की सफेद चादर में लिपटी हुई लाश को लेकर नगर उत्सव के लगे हुए होल्डिंग के नीचे रात गुजारते हैं। यह क्या अजीब विडंबना है। एक गरीब की मौत इलाज के लिए पैसे न होने से हो रही है, तो उसी शहर में नगर उत्सव पर सरकार लाखों खर्च कर रही है।

रामप्रसाद कमला की तोड़ी गिरवी रखकर बिजली का बिल भरने के बाद, जो बचे पैसे थे। उससे आगे का सारा इंतजाम कर देता है। एक किसान दूसरे किसान की सहायता ना करे तो कौन करेगा? राजेश, रामप्रसाद की तुलना में और कमजोर किसान था। पढ़ा लिखा हुआ तो क्या हुआ, था तो किसान ही। तीसरे दिन का क्रिया कर्म कर कमला और रामप्रसाद घर लौटे। रामप्रसाद के पास जो जमा पूंजी थी, वह सब इन तीन दिनों में खत्म हुई। परंपरा के अनुसार नुकता (महाभोज) में जमाई के लिए वस्त्र ले जाने पड़ते हैं। उसके लिए रामप्रसाद के पास पैसे नहीं हैं। कमला अपनी दूसरी तोड़ी को बेचने के लिए कहती है, ''तम तो असो करजो कि कल सुनार के पास चला जाजो और जाके तोड़ी के बेच के अपना बाकी पैसा ले आजो। नुकता (महाभोज) में जायगां तों जमाई के लिए टुआल (टॉवेल) धोती तो ली जानी पड़ेगी। और नाज पानी भी। असो करजो की सुनार से पैसे लेके सरो सामान भी खरीद लीजो शहर से ही।''6

किसानः किस्मत और प्रार्थना

किसानों की किस्मत और प्रार्थना अजीब होती है। वह कभी प्रार्थना करते हैं कि, मावढे का पानी गिर जाए तो उसे खेत में पानी ना देने पड़े। वही फरवरी में प्रार्थना करते हैं कि, पानी न पड़े ताकि फसल खराब ना हो। अगर किस्मत से यह प्रार्थना भगवान ने सुन भी ली और फसल अच्छी आई, तो फसल कटाई के बाद किसान जब अपने धान को लेकर मंडी में चला जाता है तो व्यापारी उसे लूटते हैं– ''व्यापारी मुट्ठी में अनाज लेकर एक भाव बता देते हैं। व्यापारियों की आपस में सांठ-गांठ रहती है कि किस ट्रॉली या बैलगाड़ी को कितने में खुटना है, कितने से ऊपर नहीं जाना है नीलामी में। बहाने हजारों हैं कम भाव के, दागी हो गया है दाना, धब्बा साफ दिख रहा है, या यह कि माश्चर है अनाज में। कुल मिलाकर सौ बहाने।''7 किसान जानता है, व्यापारी उसे ठग रहे हैं, फिर भी अपना धान वह बेचता है। क्योंकि उसके सामने तो हजार खर्चे पड़े हैं। न बेचे, तो भला और करें तो क्या करें?

अब रामप्रसाद के परिवार के सामने एक नई समस्या खड़ी हो गई है। रिवेन्यू रिकवरी डिपार्टमेंट से उसे नोटिस आया था की किसान क्रेडिट कार्ड के तहत पिछले सीजन में जो तीस हजार रुपये का लोन लिया था। उसका भुगतान करना बाकी है। रामप्रसाद मास्टरजी के मुंह से यह बात सुनकर माथा पकड़ लेता है। मास्टर जी कहते हैं– ''क्या हुआ भाई? माथा पकड़े क्यों बैठे हो? बैंक का पैसा है, लिया है तो जमा करना ही पड़ेगा। बैंक का पैसा पत्थर का अचार होता है, खाने के काम का नहीं होता। जब लिया था, तब सोचा था कि वापस कहां से करोगे अब सिर पकड़ कर बैठने से कुछ नहीं होगा।''8

मास्टर जी की बात सुनकर रामप्रसाद रोते हुए कहता है,''पन माड़साब पैसो लियो हो, तब वापस करूं? जद करजो लियो ही नी, तो वापस काय को करूं?''9 एक गरीब अनपढ़ किसान किस प्रकार धोखाधड़ी का शिकार होता है। बैंक तथा समाज के बड़े लोग, राजनेता किस प्रकार से फ्रॉड करते हैं। यहां दिखाई देता है। मास्टर जानते हैं कि रामप्रसाद धोखाधड़ी का शिकार हुआ है। मास्टर रामप्रसाद को दिलासा देते हुए बैंक और तहसीलदार के नाम एप्लीकेशन लिख कर देते हैं। और रामप्रसाद को शहर जाने के लिए कहते हैं। तहसीलदार, नायब तहसीलदार, गिरदावरों और पटवारियों, कलेक्टर के साथ नगर उत्सव की तैयारी को लेकर बैठक में थे। रामप्रसाद वहां से खाली हाथ आता है। रामप्रसाद अपनी अर्जी लेकर बैंक में जाता है, वहां यह सामने आता है कि, रामप्रसाद जैसे ही कई किसान हैं, जिनके नाम पर बैंक में कर्जा लिया है और बैंक ने दिया भी है। किसानों के नाम पर कर्जा लेने का काम पुराने बैंक मैनेजर अय्यर के साथ-साथ बिचौलिया तथा जोनल ऑफिसर का हाथ था। किसान क्रेडिट कार्ड के नाम पर जो कर्ज लिया है, यह रामप्रसाद जैसे कई किसानों को पता भी नहीं चलता बैंक मैनेजर कहते है, ''किसान क्रेडिट कार्ड सबसे आसान तरीका है बैंक से छः महीने के लिए नॉमिनल ब्याज पर पैसे लेने का। बिचौलिए और हमारे ही बैंक के लोग मिलकर सारा खेल करते हैं। छः महीने बाद पूरा पैसा जमा कर देते हैं और फिर उसी खाते में एक बार फिर से लोन लेते हैं पैसा जमा हो जाता है, तो किसी को कोई परेशानी नहीं होती। किसान को पता नहीं चलता कि उसके नाम से कोई किसान क्रेडिट कार्ड बना है।''10

बैंक मैनेजर अय्यर, ठाकुर, दलाल ने मिलकर फर्जी किसान क्रेडिट कार्ड बनवाए थे और किसानों के नाम बैंक से पैसे उठाए, किसानों को इस बात का पता भी नहीं था। पर भुगतना पड़ता है रामप्रसाद जैसे किसानों को। यह कहानी केवल रामप्रसाद की नहीं है, तो देश के उन तमाम किसानों की है, जो अनपढ़ गरीब है। बैंक भी लाखों-करोड़ों के घोटाले करके विदेश चले जाने वालों को छोड़कर रामप्रसाद जैसे गरीब किसानों के पीछे पड़ती है।

दे दाता के नाम

किसानों का शोषण केवल सरकारी कर्मचारी बैंक सूदखोर ही करते हैं ऐसा नहीं है। धर्म के नाम पर भगवान का डर दिखाकर धर्म-भगवान के ठेकेदार भी शोषण करते हैं। गांव के मंदिर का जीर्णोद्धार हो रहा है। खेती के हिसाब से किसानों को चंदा देना होगा। धर्म के नाम पर जिस प्रकार बाबा मंदिरों का निर्माण करते हैं। मंदिर बाबा का निर्माण होता है। क्या उसी प्रकार स्कूल बाबा, अस्पताल बाबा, सड़क बाबा निर्माण होंगे? ऐसा कभी नहीं हो सकता। क्योंकि भगवान का गुस्सा, भय स्कूल, अस्पताल, सड़कों में कहां? रामप्रसाद को अपनी आने

वाली फसल से ही सारे खर्चे करने पड़ते हैं। बारिश में टपकने वाली छत की मरम्मत करनी थी, पर यह मंदिर का जीर्णोद्धार इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। जब घनघोर बारिश होती है। ओले गिरते हैं तो कमला के सामने मौत का मंजर खड़ा होता। उसके हाथ में केवल सिसकियां भरने के अलावा है ही क्या? फागुन की बरसात घंटे, आधे घंटे की ही होती है। पर यह घंटा, आधा घंटा किसान का जीवन, उसकी फसल बर्बाद कर देता है। सरकार भी सरकारी मुआवजा देने के नाम पर किसान के साथ खिलवाड़ करती है। उसका मजाक उड़ाती है। फायदा किसका होता है? जो बड़े किसान है, जो राजनीति में अपनी पहल रखते है। पटवारी भी उन्हीं किसानों के, सरपंच के कहने पर ही नुकसान का सर्वे करता है। पटवारी रामप्रसाद को दो एकड़, दो डेसिमल जमीन के लिए एक हजार सरकारी रेट के अनुसार दो हजार तीन सौ रुपये मुआवजा मिलेगा कहता है। रामप्रसाद उसे पुनः पुनः दोहराता है, मानो वह पागल हो गया हो। ओलो में फसल बर्बाद होने का सदमा रामप्रसाद बर्दाश्त नहीं कर पाया। परेशान रामप्रसाद आत्महत्या करता है।

यह समूचे किसान जीवन की कहानी है। जो बेवक्त मौसम, कर्जा बढ़ने के कारण आत्महत्या करते हैं। एक ओर किसान रामप्रसाद की मौत का मातम, तो दूसरी ओर नगर उत्सव का आनंद। जो माहौल को और भी हर्षो-उल्लासित कर रहा था। जिसने कमला के अंतर्मन की चीख को दबा दिया था। कौन सुनता उसकी इस चीख को? सरकारी व्यवस्था, जो किसान जब तक जिंदा है तब तक उसे नोचती रहती है। पर आत्महत्या करने के बाद भी उसे नहीं छोड़ती। अपने कर्मों को छुपाने के लिए कलेक्टर और उनकी टीम ने रामप्रसाद को पागल ठहराया और उसकी पुष्टि भागीरथ ने भी की। जिसे मिल में पर्मनंट नौकरी देने का वादा किया गया था। कमला भी कहती है -"अरि... वो तो पागल हुई ग्या था, भोत दिन से पागल हुइ ग्या था। पागल नी होता तो असा करता कइं...अरी वो तो पागल हुइ गया था" ।11

प्रस्तुत पंक्तियों में कमला का दर्द झलकता है। और उसके साथ किसान होना पागलपन ही है। सरकारी बाबू द्वारा किया गया बर्ताव सरकार के प्रति घृणा निर्माण करता है। सच में किसान पागल ही होता है। संसार का अन्नदाता अपने घर में एक-एक निवाले के लिए मोहताज है। स्वयं भूखा रहकर संसार को पेट भर खिलाना, यह पागलपन नहीं है तो क्या है? किसानों के प्रति गौरव उद्गार केवल कविताओं, गीतों में किया जाता है। असल में उसकी मदद ना सरकार करती है, ना कोई और। कलेक्टर पीड़ित परिवार से सांत्वना, राहत राशि प्रदान करता है। मुख्यमंत्री पीड़ित किसान के बेटे को सरकारी नौकरी देने का आश्वासन देता है। इसकी आवश्यकता नहीं। आप किसान को, जब वह जीवित था, तब मदद कीजिए। वह आत्महत्या नहीं करेगा। सरकार की सांत्वना मदद किसान को वापस नहीं ला सकती।

नगर उत्सव के समापन में कवि ने धरती की बेचैनी को बयां करते हुए कहा... धरती की बेचैनी को बस बादल ही समझता है। ...

"गलत कहा कवि ने बहुत गलत कहा... धरती की बेचैनी को बादल नहीं समझता कभी नहीं समझता। धरती की बेचैनी को अगर बादल समझता तो पृथ्वी का इतना बड़ा हिस्सा रेगिस्तान नहीं होता। न अकाल होता, न सूखा ही पड़ता। धरती की बेचैनी को बादल नहीं समझता, धरती की बेचैनी को बस किसान समझता है।" मगर किसान की बेचनी को...

कौन समझेगा? यह प्रश्न अनुत्तरित था, अनुत्तरित है और अनुत्तरित ही रहेगा।

किसान की जिंदगी में सचमुच परेशानियों का कोई अंत नहीं होता। एक जाती है तो दूसरी आती है। मानो पहली वाली टलने की रास्ता ही देख रही थी। किसानों के इस त्रासदी से बड़ी कोई सामाजिक त्रासदी और दिखाई नहीं देती। हिंदी साहित्यकारों ने किसानों को केंद्र में रखकर कई कृतियां लिखी हैं। किसान जीवन के दर्द को, उनके मन के क्रंदन को, चित्रित किया। उनकी समस्याओं को दिखाया है। लेकिन उन समस्याओं का समाधान ढूंढने की आवश्यकता है। *अकाल और उत्सव* उपन्यास में रामप्रसाद द्वारा समस्त भारतीय किसान जीवन को चित्रित किया गया है। रामप्रसाद भारतीय किसानों का प्रतिनिधित्व करता है। किसान की फसल का अतिवृष्टि और अनावृष्टि दोनों स्थिति में नुकसान ही होता है। सरकार मुआवजे के नाम पर किसानों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करती है। मुआवजे में भी सरकारी बाबू रिश्वत मांगते हैं। उपरोक्त समस्या के कारण किसान पागल होकर अंत में आत्महत्या करता है। *अकाल में उत्सव* में पंकज सुबीर ने किसानों की समस्याओं का सूक्ष्मता के साथ अवलोकन किया है। संसार का पालनहार जीवित रहना चाहिए। नहीं तो एक दिन ऐसा आएगा, संसार रोटी के लिए एक-दूसरे को काटने के लिए मजबूर हो जाएगा। ■

कुंजी शब्द: किसान, दर्द, समस्या, भ्रष्टाचार, सरकारी शासन प्रणाली, किसान, क्रेडिट कार्ड, साहूकार, बैंक, बेवक्त बदलता मौसम, आत्महत्या।

संदर्भ सूची

1. सुधीर पंकज- *अकाल में उत्सव*, शिवना प्रकाशन, सीहोर, मध्यप्रदेश, दसवां पेपर बैक संस्करण, जनवरी 2020; पृ. सं- 07
2. वहीं, पृ. सं- 08
3. वहीं, पृ. सं- 12
4. वहीं, पृ. सं- 25
5. वहीं, पृ. सं- 21
6. वहीं, पृ. सं- 102
7. वहीं, पृ. सं- 105
8. वहीं, पृ. सं- 155
9. वहीं, पृ. सं- 155
10. वहीं, पृ. सं- 159
11. वहीं, पृ. सं- 255
12. वहीं, पृ. सं- 256